विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। –जैक वेल्च

केवल पैसा ही नहीं बोलता है!

हम अपने चारों तरफ यह देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं कि कुछ पैसे ज़्यादा खर्च करके अतिरिक्त विशेष सुविधा और दूसरों पर वरीयता प्राप्त की जा सकती है। हवाई यात्रा करने वाले जानते हैं कि कुछ पैसे ज़्यादा खर्च करके बोर्डिंग में प्राथमिकता हासिल की जा सकती है या यात्रा पूरी होने पर औरों से पहले अपना सामान प्राप्त किया जा सकता है। इस बात के हम इतने अधिक अभ्यस्त हो चुके हैं कि यह हमें अखरती नहीं है। दुनिया के बहुत सारे देशों में फास्ट ट्रैक टिकिट या वीआईपी पास खरीद कर संगीत समारोहों से लगाकर हवाई अड्डे की सुरक्षा जांच तक में प्राथमिकता प्राप्त कर लेना चलन में है। कुछ बरस पहले गार्डियन अखबार के एक स्तम्भकारजूलियनबगीनी ने शिकायत के स्वर में कहा था कि यह सब 'पैसा बोलता है संस्कृति' के हावी होते जाने के कारण हो रहा है। जानकार लोग मानते हैं कि पैसे से सब कुछ–प्राथमिकता भी–खरीद सकना अमरीकी अवधारणा है जो अब पूरी दुनिया में चलन में आ चुकी है। बैंकों में अधिक राशि जमा रखने वाले ठााहकों को अन्यों पर वरीयता देना तो हमारे यहां भी काफी समय से चलन में था ही, इधर हाल में मेक्सिको के सबसे बड़े बैंकों में से एक बर्नोटे ने यह व्यवस्था की है कि अगर आप खाते में ज़्यादा पैसा रखने वाले ठााहक हैं तो बैंक की 900 में से किसी भी शाखा में आप जाएं, आपको प्राथमिकता और अधिक सम्मान मिलेगा। ऐसा करने के लिए उन्होंने एक ख़ास तंत्र विकसित किया है।

हमारे देश के बहुत सारे धार्मिक स्थानों पर इस तरह की घोषित–अघोषित व्यवस्थाएं हैं जिनकी वजह से अधिक पैसा खर्च करने वाले या दान देने वालों को वरीयता प्राप्त होती है। बहुत जगहों पर स्वयं धार्मिक स्थलों की ही तरफ से ऐसी व्यवस्थाएं है कि आप ज़्यादा पैसा देकर प्राथमिकता खरीद सकते हैं और जहां इस तरह की आधिकारिक व्यवस्था नहीं है वहां सम्बद्ध धार्मिक स्थल के सेवक अनौपचारिक रूप से आपको विशिष्ट सुविधाएं दिलवा देते हैं। एक प्रमुख धार्मिक स्थल पर मैंने खुद इसका अनुभव किया। उस धर्म विशेष में समानता की खूब बात की जाती है और एक बार मैंने खूब धक्के खाकर पुण्य लाभ किया। दूसरी दफा जब मैं किसी जानकार के साथ गया तो उन्होंने एक सेवक को खासी बड़ी रकम दक्षिणा में दी, और इसका परिणाम यह हुआ कि हमें किसी अन्य मार्ग से ले जाकर बिना किसी असुविधा के तुरंत पुण्य लाभ करा दिया गया। कहने की ज़रूरत नहीं कि बहुत सारे धार्मिक स्थलों में यह व्यवस्था चलन में है, और वे धार्मिक स्थल किसी ख़ास धर्म से नहीं कई धर्मों से ताल्लुक रखते हैं।

ये कुछ प्रसंग पैसे से विशेष सुविधा खरीदने के हैं। हमारे अपने देश में पैसे से भी अधिक प्रभावी साबित होता है आपका वीआईपी होना। अगर आप वीआईपी हैं तो बग़ैर पैसा खर्च किये तमाम तरह की सुविधाएं हासिल कर सकते हैं। ऐसा होते हुए हम आए दिन देखते हैं। अगर कोई सरकारी आयोजन होता है तो उसमें आगे की कुछ कतारें वीआईपी लोगों के लिए आरक्षित रहती हैं। यह आरक्षण कई बार तो इतना मज़बूत होता है कि इन कतारों को खाली रहने दिया जाता है, चाहे पीछे लोगों को खड़ा ही क्यों न रहना पड़ जाए। राजमार्गों पर जो टोलप्लाज़ा बने हुए हैं उनके ठीक पहले एक बहुत बड़े सूचना पट्ट पर यह लिखा हुआ पढ़ना बहुत मनोरंजक होता है कि किन किन महानुभाव को टोल टैक्स देने से छूट मिली हुई है। काफी लम्बी सूची वहां होती है। उसे देखकर मैं हर बार यह सोचता हूं कि इतने सारे लोगों को टोल टैक्स मुक्ति प्रदान करने के पीछे क्या भाव रहा होगा? शायद यही कि बड़े लोगों को कतार में न लगना पड़े। लेकिन यह बात अब फास्ट टैग व्यवस्था के बाद बेमानी हो गई है। जो लोग सरकारी ड्यूटी पर यात्रा करते हैं वे अपने यात्रा व्यय का पुनर्भरण प्राप्त करते समय टोल टैक्स का भी पुनर्भरण प्राप्त क्यों नहीं कर सकते? और यही बात जन प्रतिनिधियों पर भी लागू होती है। अगर किसी को राशि का पुनर्भरण नहीं होता है तो इसका प्रावधान किया जा सकता है। लेकिन मुझे यह बात समझ में आ जानी चाहिए थी कि विशिष्ट जन भला सामान्य जन जैसे कैसे हो सकते हैं? हम समानता चाहते ही कहां हैं? हम तो चाहते हैं कि ख़ास और आम में अंतर बना रहे। अगर समानता चाहते होते तो इस तरह के अपमानजनक प्रावधानों को हटा सकते थे।

हमारे अपने देश में पैसे से भी अधिक प्रभावी साबित होता है आपका वीआईपी होना। अगर आप वीआईपी हैं तो बग़ैर पैसा खर्च किये तमाम तरह की सुविधाएं हासिल कर सकते हैं। ऐसा होते हुए हम आए दिन देखते हैं। अगर कोई सरकारी आयोजन होता है तो उसमें आगे की कुछ कतारें वीआईपी लोगों के लिए आरक्षित रहती हैं।

यह वर्णन स्पष्ट करता है कि दो तरह से अलग और बेहतर व्यवहार प्राप्त किया जा सकता है। वीआईपी बन कर या पैसा खर्च करके। जहां तक वीआईपी बनने का और बेहतर व्यवहार प्राप्त करने का सवाल है, सैद्धांतिक रूप से अधिकांशतः इसका विरोध ही किया जाता है। अपने देश में, जहां वीआईपी प्रथा कुछ ज़्यादा ही चलन में है, जब भी कोई नई सरकार बनती है, उसके कर्ता धर्ता ज़ोर शोर से वीआईपीकल्चर ख़त्म करने की घोषणा करते हैं, लेकिन बात घोषणा से आगे शायद ही कभी बढ़ती हो। मैंने इस वीआईपीकल्चर के अनेक हास्यास्पद रूप भी देखे हैं। सरकारी कार्यालयों में जहां शौचालयों की वैसे ही कमी होती है, कुछ बड़े अफसर किसी एक शौचालय पर ताला लगाकर उसे केवल अपने उपयोग के लिए आरक्षित करते भी देखे गए हैं। बात केवल शौचालय तक ही सीमित नहीं है। यह बात लिफ्ट तक भी जा पहुंचती है। एक लिफ्ट केवल साहब के लिए आरक्षित रख ली जाती है। सरकारी विश्राम गृहों में प्रायः एक दो कमरे बहुत बड़े लोगों के लिए सदा अघोषित रूप से आरक्षित रहते हैं। ये कुछ उदाहरण हैं। यह रोग क्योंकि सब जगह नहीं है, इस पर ज़्यादा चर्चा नहीं होती है। भारत जैसे देश में हम आम लोगों ने इसे अपनी नियति मान कर स्वीकार कर लिया है। निकट भविष्य में कोई उम्मीद भी नज़र नहीं आती कि यह व्यवस्था ख़त्म हो जाएगी।

लेकिन जहां तक पैसों के बल पर विशिष्ट सुविधा व व्यवहार प्राप्त करने की बात है, इस पर दुनिया भर में विमर्श होता रहता है। एक ख़ास संदर्भ में ब्रिटेन के एक संवैधानिक वकील एण्ड्रयू ली स्यूर ने कहा है कि पैसे चुकाकर प्राप्त किया गया विशेषाधिकार अन्यों के मानवाधिकार का उल्लंघन है। उन्होंने यह बात सीमा पर पैसे चुका कर जल्दी प्रवेश पाने के विकल्प के संदर्भ में कही है, लेकिन इसे और सारे संदर्भों पर भी लागू करके विचार किया जा सकता है। लेकिन सारे लोग इस सोच से सहमत नहीं हैं। मसलन शिकागो विश्वविद्यालय के एक बिज़नेस स्कूल की व्यवहार विज्ञान विशेषज्ञ आयलेटफिशबैक का कहना यह है कि प्राथमिकता वाली कतारें लोगों को यह चुनने का अधिकार देती हैं कि वे आगे बढ़ने के लिए किस संसाधन का इस्तेमाल करना चाहते हैं, समय का या पैसे का। समय और पैसे वाली इस बात में मुझे भी दम लगता है। अगर कहीं जाना होता है तो हम भी तो यह चुनाव करते हैं कि पैसेन्जर रेल से जाएं या एक्सप्रेस रेल से या फिर हवाई जहाज से। हवाई जहाज से यात्रा करते हैं तब भी यह चुनाव हम करते हैं कि हमें बिना रुके यात्रा करनी है या एक दो स्टॉपेज वाली यात्रा करनी है। और हमारे ये सारे फैसले आधारित होते हैं हमारी खर्च करने की इच्छा या क्षमता पर।

और यहीं यह बात भी सामने आती है कि कुछ प्राथमिकताएं हम चुनते हैं और कुछ हम पर थोप दी जाती हैं। जिन्हें हमचुनते हैं उनके मामले में भी बहुत बार चुनाव हमारे हाथ में होकर भी हमारे हाथ में नहीं होता है। देश के एक बहुत बड़े और अत्यंत लोकप्रिय धार्मिक स्थल पर हमने पैसे देकर प्राथमिकता खरीदी लेकिन वहां जाकर पाया कि एक खास बिंदु के बाद सब समान थे। यह एक तरह से धोखा था। लेकिन हमने सहा। आप किसी निजी और महंगे अस्पताल में यह सोचकर जाते हैं कि वहां आपको प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी या बहुत कम करनी पड़ेगी लेकिन वहां जाकर आप पाते हैं कि हालात वैसे के वैसे हैं। आप किसी निजी डॉक्टर के पास सलाह मशविरा लेने जाते हैं, अच्छी खासी फीस देते हैं और वह आपको एक ख़ास समय पर आने का निर्देश देता है। जब आप उस निर्धारित समय पर पहुंचते हैं तो पाते हैं कि कतार में आपसे पहले और बहुत सारे लोग हैं। आपने कतार से बचने के लिए ही पैसे खर्च किये थे, लेकिन कतार फिर भी आप पर थोप दी जाती है। ऐसा अनेक जगहों पर होता है।

जहां तकनीक का विवेकपूर्ण प्रयोग हुआ है वहां बहुत सारे मामलों में समानता लागू भी हो गई है। आपको कतार में नहीं रहना पड़ता है और अपने चुने हुए एकांत से आप सारा काम कर लेते हैं। लेकिन ऐसा न तो हर जगह हुआ है और न हो सकता है। जहां नहीं हुआ है वहां भी सबके साथ समानता का बर्ताव हो, यह हर विवेक सम्पन्न नागरिक चाहता है। देखना यह है कि उसका चाहा कब यथार्थ में रूपांतरित होता है! तब तक इन मुद्दों पर विमर्श ज़ारी रहेगा, और रहना चाहिए। शायद उसी से कोई राह निकले।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

खेती किसानी ही अर्थव्यवस्था की बड़ी ताकत

2003 में बड़े काश्तकार 11.6 प्रतिशत थे जो 2019 में 3.9 फीसदी ही रह गए हैं

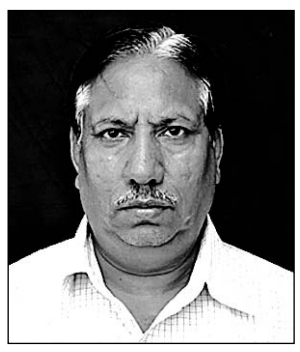

कोरोना महामारी ने दुनिया के देशों को एक सबक दिया है और वह यह कि खेती किसानी ही अर्थव्यवस्था को बचा सकती थी। यह साफ हो जाना चाहिए कि आने वाले समय में भी खेती किसानी ही अर्थ व्यवस्था की बड़ी ताकत रहेगी। कोरोना में अन्नदाता की बदौलत ही देशवासियों खासतौर से जरुरतमंद लोगों को खाद्य सामग्री का मुफ्त वितरण किया जा सका । 2019 से अब तक देश में कोरोना काल में भूख से मौत की एक भी सुर्खी नहीं बनी। यह सब संभव हो पाया अन्नदाता और सरकार के कृषि क्षेत्र में सुधारों से ही। अन्न की पोष्टिकता को लेकर प्रश्न उठाए जा रहे हैं। इस पर फिर कभी चर्चा। पर सवाल यह है कि छोटी होती जोत का कोई ना कोई हल सरकार को खोजना ही पड़ेगा। इसी तरह से परिवार कल्याण कार्यक्रम को गांवों में और अधिक प्रभावी बनाना होगा वहीं कृषि योग्य भूमि पर औद्योगिक विकास या अन्य विकास कार्यों का विकल्प खोजा जाना होगा। हांलाकि अब देश में छोटे परिवार के महत्व को क्या गांव और क्या शहर सब समझने लगे हैं पर इस पर ध्यान जारी रखना होगा। समय रहते इस और नीति निर्माताओं को ध्यान देना होगा। सरकार के थिंक टेंकों को को इसका समाधान खोजना होगा। क्योंकि खेती आज भी प्रमुख रोजगार प्रदाता है तो अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार। ऐसे में समय रहते कोई ना कोई समाधान खोजना ही होगा। नई सहकार नीति और देश की कृषि सुधार कार्यक्रमों को इसे ध्यान रखना ही होगा।

कृषि प्रधान देश के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती अन्नदाता की घटती जोत को लेकर हो गई है। देश में एक और किसानों की जोत कम होती जा रही है वहीं खेती की लागत में लगातार बढ्रोतरी हो रही है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की हालिया रिपोर्ट चेताने वाली होने के साथ ही चिंतनीय भी है। देश में बड़े और मंझौले किसान कम होते जा रहे हैं तो लघु और सीमांत किसानों की संख्या बढ़ती जा रही है। हांलाकि घटती जोत के लिए केवल सरकार को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता। अपितु जोत छोटी होने का बड़ा कारण शहरीकरण और बढ़ता परिवार है। पारिवारिक बंटवारे के चलते दिन प्रतिदिन जोत कम होती जा रही है। यदि बड़े और मंझौले काश्तकारों की संख्या में बढ्रोतरी होती तो निश्चित रुप से सरकार और केवल सरकार को दोषी ठहराया जा सकता था, सरकार की नीतियां दोषी हो सकती थी, पर बड़े और मध्यम श्रेणी के किसान कम होने से साफ होता जा रहा है कि पारिवारीक बंटवारा इसका प्रमुख और मुख्य कारण हो सकता है। मजे की बात यह है कि हालिया रिपोर्ट की माने तो भूमिहीन किसानों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। यानी खेती पर निर्भरता कम नहीं हुई है अपितु खेत–किसानी की जोत जरुर कम हो रही है।

छोटे–बड़े किसानों की गणित को यों समझा जा सकता है कि एक से दो हैक्टेयर भूमि वाले किसान छोटे या सीमांत किसान की श्रेणी में आते हैं तो 0.002 हैक्टेयर से कम भूमि वाले किसानों को भूमिहीन किसानों की श्रेणी में रखा जाता है। इसी तरह से दस हैक्टेयर से अधिक भूमि वाले किसानों को बड़े किसानों की श्रेणी में रखा जाता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण ने अपनी 77 वें दौर की रिपोर्ट में 2019 तक के आंकडों का विश्लेषण किया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया जाए तो 2003 में देश में दस हैक्टेयर या इससे अधिक भूमि वाले बड़े काश्तकार 11.6 प्रतिशत थे जो 2013 में घटकर 5.8 प्रतिशत रह गए और 2019 में और कमी होते हुए बड़े किसान 3.9 फीसदी ही रह गए हैं। इसी तरह से मंझौले किसान भी 2003 की 23.1 प्रतिशत की तुलना में 2013 में 18.8 प्रतिशत और 2019 आते आते 14.7 फीसदी ही रह गए। यह निश्चित रुप से चिंतनीय हालात है। क्योंकि छोटी जोत में खर्चा निकलना ही मुश्किल हो जाता है। यह सबतो तब है जब देश में कृषि सुधार कार्यक्रम तेजी से चलाए जा रहे हैं। जंगल सीमित होते जा रहे हैं। खेती में नवाचारों के चलते आधुनिक साधनों का उपयोग होने लगा है। खेती कार्य आसान हो जाने से अब पूरे परिवार को खपने की आवश्यकता नहीं होकर कम मानव संसाधन से भी आसानी से खेती की जा सकती है। अतिरिक्त आय के साधन भी विकसित हुए हैं।

–डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
वरिष्ठ लेखक

लोकतंत्र में विरोध को समझना होगा सत्ता को

विरोध करना लोकतंत्र की खूबसूरती है, विरोध करने वालों को संबंधित विषयों पर मंथन करना चाहिए, तार्किक ढंग से किया गया विरोध जुम्बिश पैदा करता है। लोकतंत्र में विरोध जरूरी है और तब तक बंद न हो जब तलक सत्ता में जमे लोगों की आँख न खुल जाये।

जो सत्ता विपक्ष को महत्व देती हो वही लोकतंत्र को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी भी देती है। विपक्ष विहीन लोकतंत्र तानाशाही शासन होता है । लोकतंत्र में तानाशाही का कोई स्थान नहीं है।

विपक्ष की भी यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे किसी भी विषय पर विरोध निश्चित तौर पर विस्तार से करें परन्तु तर्क संगत मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए फिर विरोध किया जाना चाहिए। ऐसे विरोध में लोक की सहमति होती है। विपक्ष को अपने साथ केवल विपक्षी सांसदों और विधायकों तक सीमित नहीं रहते हुए आम जन को मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से परिचित कराने का काम करना होगा तभी वह विरोध किसी एक राजनैतिक दल का नहीं होकर आम अवाम की बात होगी।

सत्ता में बैठे लोगों को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि उन्हें पाँच साल का परमिट मिला हुआ है, लोक को सर्मपित लोक कल्याणकारी

शासन संचालित करने की जिम्मेदारी संख्या के आधार पर मिली है। जिन मुद्दों पर भरोसा और विश्वास रखते हुए आप द्वारा किए गए वादों के आधार पर आपको सत्ता सौंपी गई थी। सत्ता द्वारा कोई भी विषय संसद के पटल पर रखे जाते है और उन विषयों पर कानून बनाये जाने से पहले विपक्षी विरोध पर गहराई से समझने की कोशिश होनी चाहिए और यह जिम्मेदारी सत्ता की लोकतंत्र में आवश्यक रूप से होती है। वह तानाशाही रवैया होता है कि हमने तो बना दिया यही फाइनल अनुमोदित किया जाना चाहिए।

जातिगत आधार पर लोकतंत्र में लोक के साथ खुले आम अवाम के दिमाग पर चोट करती सत्ता का असली चेहरा सामने आयेगा तब देश बिक चुका होगा। लोकतंत्र में तानाशाही शासन की अवधि कुछ समय के लिए ही होती है स्थायी रूप से नहीं हो सकती।

विपक्ष के विरोध को गंभीरता से समझने की जरूरत है आखिर विपक्षी दल भी लोक कल्याण के लिए ही तो विरोध करते हैं। लोकतंत्र में ऐसा करना सत्ता की नैतिक जिम्मेदारी है ऐसा नहीं करना तानाशाह बनने की राह देखना है।

विरोधी दलों को कभी भी संसद से बहिस्कार नहीं करना चाहिए, संसद में बैठे रहते हुए सरकार को आइना दिखाने का काम करना होगा तभी सरकारी तंत्र विरोध को समझेगा। लोकतंत्र में सत्ता में उँचे पदों पर काबिज नेता कभी भी विरोध झेलते नहीं है इसलिए ही वें संसद में आते तक नहीं है, विपक्षियों को उन्हें यह समझाने की ताकत होनी चाहिए कि संसद के बगैर सरकार नहीं है। जिस दिन सत्ता विरोध को गंभीरता से स्वीकार करना सीखेगी और विपक्ष विरोध का तात्पर्य सरकार को समझा देगा मानो लोकतंत्र में लोक की आवाज़ को तंत्र द्वारा दबाने की साजिश कामयाब नहीं होगी।

–राजेन्द्र जोशी
कवि- कथाकार

स्वास्थ्य केंद्र पर चार माह से शो–पीस बनकर खड़ी एम्बुलेंस

- **17 लाख रुपए की एम्बुलेंस, डीजल और चालक के लिए नहीं मिला बजट**
- **ड्राइवर की व्यवस्था आरएमआरएस बांदनवाड़ा के माध्यम से ऑन कॉल बेसिस पर की जानी थी**

बांदनवाड़ा, (निसं) । भले ही बांदनवाड़ा अस्पताल को एम्बुलेंस मिल गई हो, लेकिन 4 माह से एम्बुलेंस केवल शोपीस बनकर रह गई है। ड्राइवर के अभाव में एम्बुलेंस अब तक एक इंच भी नहीं हिली है। राष्ट्रीय राजमार्ग 79 पर स्थित बांदनवाड़ा सीएचसी पर एम्बुलेंस आए चार माह बीत जाने के बाद भी ड्राइवर की उपलब्धता नहीं हो सकी है।

ग्रामीणों ने बताया कि बांदनवाड़ा अस्पताल में एम्बुलें स के आने के बाद खुशी मिली थी, लेकिन यह अब ड्राइवर के अभाव में खड़ी रहती है। अभी कुछ दिन पहले ही अस्पताल के सामने हाईवे पर न्यारा मोड़ में एक बाईक सवार पिता पुत्र की दुर्घटना हो गई और गंभीर घायल हो गए व उन्हे सी एच सी से रैफर कर दीया गया । जिसमें घायल ावस्था में एक घंटे तक वाहन का इंतजार करना पड़ा व 08 एम्बुलेंस के जल्दी नहीं आने बांदनवाड़ा अस्पताल में स्थित एम्बुलेंस में ड्राईवर नहीं होने से इन्हें भी निजी वाहन में ले जाना पड़ा।

जानकार सूत्रों की मानें तो एंबुलेंस के संचालन के लिए ड्राइवर की व्यवस्था नियमानुसार आरएमआरएस बांदनवाड़ा के माध्यम से ऑन कॉल बेसिस पर की जानी थी। स्थानीय स्तर पर कमेटी गठित कर इस सम्बंध में निर्णय लिए जाने की बात हुई थी लेकिन अभी तक अस्पताल प्रशासन की उदासीनता से एंबुलेंस पर धूल की परतें चढ़ ती जा रही हैं।

श्री शंकराचार्य और केदार

श्री शंकराचार्य उन महान आध्यात्मिक गुरुओं में से एक हैं जिन्होंने भारत की आध्यात्मिक और दार्शनिक विरासत को समृद्ध किया है। उन्होंने अपनी गूढ दार्शनिक स्थापनाओं तथा अपने भावपूर्ण भजनों से लाखों लोगों – बौद्धिक वर्ग तथा साधारण जनता दोनों – के दिलों को गहराई से छुआ है। 'शंकर विजय' के इतिवृतों से उनकी जीवनी का पता चलता है। श्री विद्यारण्य के बताए जाने वाले माधवीय शंकर विजय से स्पष्ट पता चलता कि श्री शंकराचार्य ने पवित्र नगरी केदार में सिद्धि प्राप्त की थी ।

इसमें श्री शंकराचार्य के परमात्मा में विलीन होकर भगवान शिव के रूप में अपना मूल स्वरूप पा लेने का काव्यात्मक वर्णन है। इसमें बताया गया है कि वे केदार कैसे पहुंचे । सनातन धर्म के सभी संप्रदायों पर विजय प्राप्त करने तथा कश्मीर स्थित सर्वज्ञ पीठ पर आरूढ होने के बाद वे वह अपने नश्वर शरीर को त्याग कर अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करने के लिए केदार पहुंचे।

परिकाक्षीश्वरोप्यापदुद्धारकं सेवमानातुलस्वस्तिविस्तारकं ।

पापदावानलातापसंहारकं योगिवृंदाधिपः प्राप केदारकम।।

इसके बाद, आचार्य शिव की पवित्र भूमि केदार गए, जहां पाप की गर्मी से मानव मुक्त होते हैं और उनके मन शांत होते हैं , जहां भगवान के भक्त जीवन के खतरों और कठिनाइयों से उबरा हुआ महसूस करते हैं। माधवीय शंकर विजय के अनुसार आचार्य ने अपने शिष्यों को भारी ठंड से बचाने के लिए गर्म पानी का एक झरना (तप्तोदक) बनाया।

तत्रातिशीतार्दितशिष्यसंघसंरक्षणायातुलितप्रभावः।

तप्तोदकं प्रार्थयाते स्म चंद्रकलाधरात्तीकर प्रधानः।।

गरमान्दिवृन्दपातिना गिरिशोर्थितः सन् सन्तप्तवारिलहरीं स्वपदारविन्दात्।

प्रावर्तयत् प्रथयति यतिनाथकीर्ति याद्यापि तत्र समुंचति तप्ततोया।।

वहां ठंड इतनी तेज थी कि उनके शिष्य इसे सहन नहीं कर पा रहे थे। अतः आचार्य ने उन्हें राहत दिलाने के लिए भगवान शिव का ध्यान लगाया तो प्रभु के चरणों से गर्म पानी का एक सोता फूट पड़ा जो आचार्य शंकर की महिमा का गान करते हुए आज भी बह रहा है।

इति कृतसुरकार्यं नेतुमाजग्मुरेनं रजतशिखरिश्रङ्गं तुंग मीशातारम् ।

विधिशतमखचन्द्रोपेन्द्रवाय्वग्नि पूर्वाः सुरनिकरवरेण्याः सर्षितसंघा प्रसिद्धाः ।।

विद्युद्वल्लीनियुतसमुदारब्ध युद्धे अरर्विमानः संख्यातीतैः सपदि गगनाभोगमाच्छादन्तः ।

स्तुत्वा देवं त्रिपुरमथनं ते यतीशानवेषं मन्दारोत्थै कुसमनिचयैः अब्रुवन्नर्चयन्तः ।।

अब ब्रह्मा की अध्यक्षता में ऋषि और देवों की एक सभा हुई कि देहधारी शिव को उनकी पवित्र अवस्था में कैलाश के शिवलोक में वापस ले जाएं । प्रकाशमय रथों के समूह से स्वर्गीय पथ को भर गए । आकाश से देवताओं ने मंदरा के फूलों की भारी बारिश की और संन्यासी का रूप धारण करने वाले भगवान शिव की महिमा गाई। अंत में वे केदार में शिव के मूल रूप में समा गए।

इंद्रोपेन्द्रप्रधानैः त्रिदशपरिवृढै स्तूयमानः प्रसूनैः, दिव्यैरभ्यच् र्यमानैः सरसिरुहभुवा दत्त हस्तावलंबः ।

आरुह्यो क्षाणमाठाया प्रकटितसुजटाचूडचन्द्रावतंसः श्रण्वन्नालोकशब्दं समुदितमृषिभिः धाम नैजं प्रस्तथे ।

इन रोमांचक घटनाओं के बीच, ब्रह्मा ने सहारा दिया और वह महान संन्यासी दिव्य बैल पर आरूढ हुए और खुद को अपने वास्तविक जटाधारी भगवान शिव के रूप में ले आए जिनके सिर पर अर्धचंद्र झांक रहा था । देवों और ऋषियों के जयकारे के बीच उन्होंने अपने दिव्य निवास को प्राप्त किया।

इस प्रकार माधवीय शंकर विजय में आचार्य के केदार पहुंच कर परम धाम की सिद्धि पाने का स्पष्ट विवरण मिलता है। अन्य ग्रंथ भी इस घटना का संदर्भ देते हैं। शिवरहस्य के कुछ अंश कहते हैं कि कैसे उन्होंने नारायण की स्तुति करके जलकुंड बनाया।

नारायणं तत्र तपज्जलौघं कुण्डं प्रशीतस्य निवारणाय ।

ध्यात्वा शिवं तत्र निविश्य तस्थो कैलाशदेसा द्वृशभश्च देवाः ।।

कड़ी ठंड से राहत के लिए वहां वे गर्म पानी का तालाब उपलब्ध कराने के लिए नारायण का ध्यान करने बैठे। कैलाश से आये देवता और वृषभ ने उनकी महिमा गाई।

मार्कन्डेय संहिता, जिसे अकसर कांची मठ के इतिहास में उद्धृत किया जाता है, में इसका संदर्भ मिलता है कि आचार्य ने कैलाश से पांच शिव लिंग और सौंदर्य लहरी प्राप्त किए और केदार में मुक्ति लिंग स्थापित किया।

गत्वा कैलाशशैलं जगदखिलगुरुः शंकराचार्ययोगी, दृष्टवा साम्बं शिवं तं स्वयमिति सूचिरं चिन्तयन्नन्तरंगे

लब्ध्वा पंचालिंगान्यमलतरशुभालिंग्तान्यंगभाजां ,भूत्यै सौन्दर्यसारं हिमगिरिदुहितुः प्रापयन् गामयासीत् ।

मुकतिलिंग तु केदारे नीलकंठे वरेश्वरम् प्रतिष्ठाप्य महायोगी परां प्रीतिमवाप सः ।।

सारे संसार के गुरु कैलाश पर्वत पर गए और भगवान की शिव और पार्वती की पूजा करने के बाद उन्हें उनके साथ एकात्म होने का ज्ञान मिला । उन्हें पांच आत्मलिंग तथा सौंदर्य लहरी मिले जिन्हें उन्होंने संसार में स्थापित किया। केदारंग में मुक्तिलिंग स्थापित किया गया तथा वराहलिंग नीलकंठ में।

अन्य शंकरविजयों में भी आचार्य की केदार यात्रा तथा सिदविलास, गोविंदनाथ आदि लिंगों की स्थापना का जिक्र आता है। आज भी हम केदारनाथ में आचार्य की महासमाधि देख सकते हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 8 नवम्बर, 2021

कार्तिक मास शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2078, मूल नक्षत्र सायं 6:49 तक, सुकर्मा योग दिन 3:26 तक, विष्टि करण दिन 1:17 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–तुला, चन्द्रमा–धनु, मंगल–तुला, बुध–तुला, गुरू–मकर, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

आज रवि योग सायं 6:49 तक है। कुमार योग दिन 1:14 से सायं 6:49 तक है। भद्रा दिन 1:17 तक है। आज विनायक चतुरथी और दुर्वा गणपति व्रत है और सूर्य छठ व्रत आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:06 तक, शुभ 9:28 से 10:49 तक, चर 1:32 से 2:53 तक, लाभ–अमृत 2:53 से सूर्यास्त तक, शुभ 1:33 से 2:53 तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 5:36

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन

परिवार में प्रसन्नता–हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

कर्क

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिव स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक विवादों से राहत मिल सकती है।

सिंह

महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। मन खिन्न हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिव स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कुंभ

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी।